B. A. History Hon's Part: II
Paper: IV, Unit: IV, Date: Lecture No.: 5
6.11.2020

Lession: तुर्की — मुस्तफा कमाल पाशा

अतातुर्क कमाल पाशा तुर्की का महान राजनेता था, जिसने प्रथम विश्वयुद्ध में ध्वस्त एवं पस्त तुर्की का कायाकल्प कर एक विकसित आधुनिक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रीय राज्य में परिणत कर दिया। प्रथम विश्वयुद्ध के समय तुर्की का सुल्तान मुहम्मद छठा था, जिसे तुर्की की पराजय के बाद मित्र राष्ट्रों के दबाव में अपमानजनक सेवे की संधि पर हस्ताक्षर करने पड़े। इसकी भीषण प्रतिक्रिया तुर्की में हुई। कमाल पाशा ने सेवे की संधि के विरुद्ध आम भावना को नेतृत्व दिया और सितम्बर 1919 में सिवास नामक स्थान पर अखिल तुर्क कांग्रेस नामक राजनीतिक दल का गठन कर तुर्की की समानांतर सरकार की स्थापना की। समानान्तर सरकार की स्थापना कर कमाल पाशा ने घोषणा की कि उसे सेवे की संधि स्वीकार्य नहीं और ग्रीस, इटली आदि देशों को आगाह किया कि वे यथाशीघ्र तुर्की के अधिकृत प्रदेशों को खाली कर दें, जो उन्होंने प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान कब्जा किया था। कमाल पाशा ने ग्रीस और इटली के विरुद्ध युद्ध की उद्घोषणा कर दी और उन्हें परास्त कर तुर्की से खदेड़ दिया। ब्रिटेन, फ्रान्स आदि मित्र राष्ट्रों को अब यह समझ में आ गया कि तुर्की की वास्तविक सत्ता अब कमाल पाशा के हाथों में है। अतः उन्होंने सेवे की संधि में संशोधन करने के लिए नयी संधि का प्रस्ताव दिया, जिसे कमाल पाशा ने स्वीकार कर लिया। सुल्तान को भी अपनी हैसियत का पता चल गया और वह 1922 में देश छोड़कर बाहर चला गया। 1923 में कमाल पाशा के नेतृत्व में तुर्की में गणतांत्रिक शासन की स्थापना कर, तुर्की को गणराज्य घोषित कर दिया गया। इस प्रकार कमाल पाशा ने सल्तनत अर्थात् राजतंत्र को समाप्त कर तुर्की में गणतंत्र की स्थापना की।

कमाल पाशा प्रगतिशील विचारों से सम्पन्न एक कुशल राजनेता था। उसने तुर्की की आन्तरिक और बाह्य नीतियों को सफलता पूर्वक क्रियान्वित किया। लोकतांत्रिक विचारों के अनुरूप तुर्की की जनता को सम्प्रभु माना गया और उनके द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों की राष्ट्रीय विधान सभा का निर्माण किया गया। राष्ट्रीय विधान सभा को राष्ट्रपति चुनने और राज्य की समस्त कार्यपालक, न्यायिक एवं विधायी शक्ति सौंपी गई। राष्ट्रपति के लिए यह जरूरी था कि राष्ट्रीय विधान सभा अर्थात् संसद के सदस्यों के मध्य से ही प्रधानमंत्री नियुक्त करे। प्रधानमंत्री को संसद सदस्यों के बीच से ही मंत्री बनाने का अधिकार दिया गया। इस प्रकार कमाल पाशा ने लोकतांत्रिक प्रणाली की मुकम्मल व्यवस्था की और जब इसके आधार पर 1924 में आम चुनाव हुआ तो उसमें उसकी रिपब्लिकन पीपुल्स पार्टी को प्रचंड बहुमत हासिल हुआ। अब भारी बहुमत से तुर्की का ~~आधुनिकीकरण तथा धर्म~~ राष्ट्रपति निर्वाचित होने के बाद कमाल पाशा ने तुर्की के आधुनिकीकरण तथा धर्म निरपेक्षीकरण का एक ऐसा अभियान छेड़ा, जिसके फलस्वरूप सदियों से बीमार तुर्की राज्य स्वस्थ सक्षम एवं समर्थ बन गया।

कमाल पाशा ने अपने प्रगतिशील धर्मनिरपेक्ष विचारों और आधुनिक दृष्टि के अनुरूप पूरी सख्ती के साथ तुर्की के रूपान्तरण का अभियान चलाया। धार्मिक शिक्षण संस्थानों तथा परिधानों पर उसने पूरी तरह पाबन्दी लगा दी। पूरे तुर्की में आधुनिक पश्चिमी शिक्षण संस्थानों का संजाल बिछा दिया गया। इसी तरह पश्चिमी परिधानों को धारण करने का चलन किया। तुर्की टोपी के स्थान पर लोगों को हैट पहनने को कहा गया। अरबी लिपि का परित्याग कर तुर्की भाषा के लिए रोमन लिपि अपनाई गई। इसी तरह अरबी पंचांग के स्थान पर पश्चिमी ज्यार्जियन कैलेंडर को लागू किया गया। कमाल पाशा ने न्याय के क्षेत्र में भी शरीयत के स्थान पर स्वीस दीवानी कानूनों, इटालियन फौजदारी कानूनों और जर्मन व्यापारिक कानूनों का तुर्की की परिस्थिति के अनुरूप संहिताकरण किया गया। केवल तलाक सम्बन्धी कानून ही शरियत के अनुसार जारी रहे। पुरुषों के समान स्त्रियों को भी मताधिकार प्रदान किया गया। इस प्रकार सही मायने में तुर्की पश्चिमी माडल का आधुनिक राष्ट्रीय राज्य बन गया। इसके लिए खिलाफत के पद को भी समाप्त कर दिया।

कमाल पाशा ने अपने शासन की शुरुआत में ही प्रथम विश्वयुद्ध के विजयी देशों को 1923 में लोजान की सन्धि करने के लिए बाध्य किया था, जिससे न केवल तुर्की गणराज्य की सम्प्रभुता को अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता मिली, अपितु प्रथम विश्वयुद्ध में तुर्की के खोये प्रदेश उसे वापस भी मिल गए। 1936 में पाशा ने पश्चिमी शक्तियों से मोन्ट्रो की संधि की, जिसके परिणामस्वरूप बोस्फोरस और डार्डेनल्स का जलडमरूमध्य उसके प्रभाव क्षेत्र के अन्दर आ गया।

इस प्रकार कमाल पाशा आन्तरिक और बाह्य दोनों मोर्चों पर एक सफल राजनेता, कुशल प्रशासक और महान सुधारक सिद्ध हुआ, जिसने तुर्की को अपने पिछड़े हुए पड़ोसी राज्यों की तुलना में काफी उन्नत आधुनिक राष्ट्र में परिणत कर दिया।

□ डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कालेज, जमनगर